International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

फाह्यान का भारत दर्शन में सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का वर्णन

डॉ. पिंकी यादव

आचार्य, इतिहास विभाग, बी.एस.आर. राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर (राज.)

सारांशः

फाह्यान ने ई. 402–411 ई. के बीच भारत का भ्रमण किया। वह भारत में पंजाब, मथुरा एवं फर्रुखाबाद गया। वह श्रावस्ती, कपिलवस्तु, गया, सारनाथ, कुशीनगर, वैशाली आदि बौद्ध स्थानों का दर्शन करता हुआ पाटलिपुत्र पहुँचा। वह तीन वर्ष तक चंद्रगुप्त द्वितीय की राजधानी पाटलिपुत्र में रहकर संस्कृत सीखता रहा। फाह्यान ने राजगृह, सारनाथ, बोधगया, वाराणसी की भी यात्रा की। अंत में, अपनी वापसी में वह चंपा, तामलिप्ति के बंदरगाहों से होता हुआ जहाज द्वारा सिंहल (लंका) गया। फाह्यान ने 414 ईस्वी में अपनी यात्रा का वृतांत 'बौद्ध राज्यों का अभिलेख' नाम से लिखा, जिसे आज 'फाह्यान की यात्राएँ' नाम से जाना जाता है। फाह्यान ने कोई अलग से धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति का वर्णन नहीं किया है बल्कि उनके यात्रा विवरणों के अध्ययन करने से उस समय के समाज व संस्कृति का पता चल जाता है। भारत सम्बन्धी विवरणों से हमें तत्कालीन भारत के सामाजिक जीवन के विषय में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। फाह्यान ने अपने यात्रा विवरण में अपना ध्यान अधिकांशतः धार्मिक स्थलों के विवरण एवं वहां की धार्मिक स्थिति पर ही केन्द्रित किया है। परन्तु उसके विवरणों में भारतीय लोगों के सामाजिक जीवन की भी जानकारी मिलती है।

प्रस्तावना

फाह्यान का जन्म का नाम कूग था, चीनी भाषा में फा का अर्थ धर्म और हियान का अर्थ आचार्य इसप्रकार फाह्यान नाम का अर्थ धर्माचार्य या धर्मगुरू से है। फाह्यान का नाम पहले कूंग था। बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने के उपरान्त उसका नाम फाह्यान रखा गया। उसका जन्म शान–सी प्रदेश (चीन) के एक छोटे से गांव में हुआ था और तीन वर्ष की अल्पायु में ही वह श्रमण हो गया था। सोलह वर्ष तक उसने स्वदेश में ही गम्भीर अध्ययन किया और उसके उपरान्त वह भारत यात्रा को निकल पड़ा।[1]

शान–सी प्रदेश से चलकर फाह्यान अपने साथियों सहित मरुभूमि पार करता हुआ कारा शहर और वहाँ से खोतान के पश्चिम–दक्षिण भाग में जा पहुँचा। उसके कुछ साथियों ने कारा शहर में ही उसका साथ छोड़ दिया था। खोतान की प्रसिद्ध रथ–यात्रा (बौद्ध मूर्तियों का रथ में प्रदर्शन) देखने के उपरान्त वह काशगर आया जहाँ से दरद देश होते हुए उद्यान के राज्य से उसकी भारत यात्रा प्रारम्भ हुई।[2] नगरहार होते हुए वह मथुरा एवं संकिशा आया और यहाँ से उसने कोशल की राजधानी श्रावस्ती का मार्ग अपनाया। तदुपरान्त कपिलवस्तु और वैशाली होते हुए वह पाटलिपुत्र पहुँचा। जान पड़ता है कि वहीं से उसने राजगृह और बोधगया की भी यात्रा की और साथ ही दक्षिण के किसी प्रदेश से लौटकर वाराणसी और सारनाथ के पुण्य–स्थलों का परिभ्रमण करता हुआ वह पुनः पाटलिपुत्र लौटा। पाटलिपुत्र से चम्पा और चम्पा से ताम्रलिप्ति के प्रसिद्ध बन्दरगाह तक की यात्रा की और वहाँ से वह जहाज द्वारा सिंहल या लंका गया। लंका से ही वह अनेक कठिनाइयाँ सहता हुआ जल–मार्ग से दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों तक गया और वहाँ से स्वदेश वापस लौटा गया।[3]6

राजनीतिक व्यवस्था : फाह्यान ने 399 ई0 से लेकर 414 ई0 तक उत्तर भारत का परिभ्रमण किया। ह्वेनसांग की यात्रा से उसकी यात्रा इस दिशा में भिन्न है कि ह्वेनसांग की भांति उसने दक्षिण भारत की यात्रा न की और जलमार्ग से ही लंका होते हुए स्वदेश लौटा। कई दृष्टिकोणों से फाह्यान का विवरण अपूर्ण माना जाता है क्योंकि उसने अपने ध्येय के अनुसार केवल बौद्ध–धर्म की स्थिति पर ही प्रकाश डाला है राजनैतिक एवं अन्य अवस्थाओं पर नहीं। उल्लेखनीय है कि वह प्रतापी गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के राज्यकाल में भारतवर्ष आया था पर उसके विवरण में कहीं भी उक्त सम्राट का नाम नहीं मिलता। फिर भी यात्रा विवरण के सन्दर्भ में यत्र–तत्र कई ऐसे प्रसंग आ जाते हैं जिनके द्वारा तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था पर कुछ प्रकाश पड़ता है। उसने उत्तर भारत के कई महत्वपूर्ण नगरों की चर्चा की है।[4]

सामाजिक व्यवस्था : तत्कालीन समाज पर प्रकाश डालते हुए फाह्यान ने भारतीयों के आचरण को आदर्श, धर्मपरायण एवं अत्यंत उच्चकोटि का बताया है। लोग अतिथि परायण होते थे। मध्य देश में लोग पशुवध, मद्यपान, प्याज, लहसुन, मदिरा, मांस, मछली का प्रयोग नहीं करते थे। वह लिखता है कि समस्त देश में न तो कोई जीव की हत्या करता है और न ही कोई प्याज, लहसुन खाता है। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय जनता साधारणतया शाकाहारी थी और अहिंसा के सिद्धांत पर आचरण करती थी। फाह्यान ने समस्त देश में वर्ण–व्यवस्था स्थापित होने और चाण्डालों के नगर की सीमा के बाहर रहने का उल्लेख किया है। फाह्यान ने देखा था कि ये लोग नगर के बाहर रहते थे और नगर–मार्गों पर अपने आगमन की सूचना लकड़ी ठोक–ठोक कर देते थे जिससे सवर्ण या उच्च वर्ण के लोग

उनके स्पर्श से बच सकें।[5] फाह्यान के अनुसार भारतीय अधिकांशतः शाकाहारी थे। उनके अनुसार मध्य–देश में पशुवध, मद्यपान, प्याज–लहसुन का प्रयोग एक प्रकार से अज्ञात था। उसके वर्णन में संकेत मिलता है कि ऊनी, सूती और रेशमी–तीनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग देश में होता था। जेतवन बिहार के एक धार्मिक अनुष्ठान में उसने ध्वजों और पताकाओं तथा पण्डाल में रेशम के प्रयोग का उल्लेख किया है। उसका कथन है कि साधारणतया लोग सम्पूर्ण उत्तर भारत में एक ही प्रकार के वस्त्र धारण करते थे। यह संकेत उसके इस कथन से स्पष्ट है कि उसने कश्मीर के लोगों की वेशभूषा को मध्य–प्रदेश के लोगों से मिलता–जुलता माना है। सम्भव है कि वह ग्रीष्म ऋतु में ही कश्मीर गया हो और इस कारण मध्य–देश के लोगों की भांति ही वस्त्र–धारण करते हुए जन–समुदाय को देखा हो। फाह्यान ने भारतीयों में पुष्पों और सुगन्धियों के प्रति विशेष रुचि देखी थी। किन्तु उसके विवरण केवल धार्मिक कृत्यों तक ही सीमित हैं। भारतीयों की अतिथि–परायणता और उसकी दयालुता की फाह्यान ने भूरि–भूरि प्रशंसा की है। फाह्यान के अनुसार शारीरिक पवित्रता के साथ–साथ लोगों की धर्म–परायणता भी उच्चकोटि की थी।[6]

फाह्यान ने भारतीयों के आचरण को आदर्श एवं अत्यन्त उच्च–कोटि का कहा है। उसके अनुसार चोरी और डकैती सरीखे नैतिक अपराध नहीं होते थे और दण्ड–व्यवस्था भी उसी अनुपात में सरल थी।[7] चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का फाह्यान द्वारा विशेष वर्णन हुआ है। इसके अनुसार देश के सभी छोटे–बड़े नगरों में औषधालयों की सुन्दर व्यवस्था थी। लोग उपचार हेतु अपनी सुविधानुसार उन औषधालयों में अपनी चिकित्सा कराते और कभी–कभी यथेष्ट दिनों तक वहाँ ही निःशुल्क औषधि, भोजन आदि ग्रहण करके स्वस्थ शरीर के साथ अपने घरों को लौटते थे। साधारणतया मध्यम वर्ग और वैश्य वर्ग के लोग औषधालयों की व्यवस्था और औषधियों के समुचित प्रबन्ध को देखते थे। किन्तु कुछ असाध्य रोगों से पीड़ित तथा अतिवृद्ध लोगों ने नदियों में डूबकर अपनी यातना से छुटाकरा पाने का भी उल्लेख उसके विवरणों में मिलता है।[8] प्राचीन भारत की शिक्षा–पद्धति सहधर्मी (बौद्ध) विदेशियों के विशेष आकर्षण का कारण रही है। इन चीनी बौद्ध भिक्षुओं ने यहाँ के शिक्षण संस्थाओं (बौद्ध संघ) में रहकर यहाँ के भाषाओं की जानकारी प्राप्त की थी। अतः यदि फाह्यान और ह्वेनसांग के वर्णनों में भारत के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्रों एवं साधारण जन समुदाय के शिक्षा स्तर के सम्बन्ध में यथेष्ट विवरण उपलब्ध हों तो आश्चर्य नहीं।[9]

फाह्यान ने वैश्य जाति की प्रशंसा की है क्योंकि इस जाति के लोग बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार एवं भिक्षुओं के विश्राम हेतु मठों के निर्माण में काफी धन व्यय करते थे। फाह्यान के विवरण से पता चलता है कि लोग ऊनी, सूती और रेशमी तीनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे। हवनों और पताकाओं में रेशम का प्रयोग होता था। फाह्यान के अनुसार भारतीय पुष्पों और सुगंधियों के पैकीन थे। शारीरिक पवित्रता के साथ–साथ लोगों की धर्मपरायणता भी उच्चकोटि की थी। भारत के लोग पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे और पाप–कर्म करने को बुरा मानते थे।

धार्मिक व्यवस्था : चीनी यात्री फाह्यान के यात्रा काल में समस्त उत्तर भारत में अनेक प्रकार के धर्म प्रचलित थे। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म पालन की पूर्ण स्वतंत्रता थी और धर्म के विषय में राज्य की ओर से किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होता था। किन्तु इन दिनों उत्तर भारत में ब्राह्मण धर्म की सर्वाधिक प्रतिष्ठा थी। बौद्ध धर्म अपेक्षाकृत अवनति पर था और जैन धर्म के सम्बन्ध में फाह्यान सर्वथा मौन है। यह मौन इस बात का प्रमाण है कि कुछ थोड़े से भू–भागों के अतिरिक्त जन–समुदाय में जैन धर्म की मान्यता कम थी। बौद्ध–धर्म के सम्बन्ध में इतना अवश्य स्पष्ट है कि हीनयान और महायान दोनों ही मतों के अनुयायी उत्तर भारत में विद्यमान थे। जनता बौद्ध धर्म के प्रति अपना अनुराग स्तूपों एवं चैत्यों के निर्माण तथा उनके पूजन से व्यक्त करती थी। बौद्ध बिहारों को राजाओं द्वारा अनेक प्रकार के अनुदान प्राप्त होते रहते थे। बौद्ध भिक्षु एवं बौद्ध धर्मानुयायी विनय के नियमों को पूर्ण रूप से निभाने में निपुण थे।

बौद्ध धर्म की कई अन्य विशेषताओं का भी फाह्यान ने उल्लेख किया है। भिक्षुणियों के सम्बन्ध में उसने आनन्द के स्तूप के पूजन का उल्लेख किया, क्योंकि उसी के प्रयास के कारण बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना हुई थी। इसके साथ ही उसने बौद्धों द्वारा मूर्तियों के जुलूस निकाले जाने की प्रथा का उल्लेख किया है और स्वयं अपनी आँखों से खोतान तथा पाटलिपुत्र में बुद्ध एवं बोधिसत्व मूर्तियों का चार पहिए वाले विशाल रथ पर इस प्रकार का प्रदर्शन देखा था। स्वयं राजा तथा रानी अपनी श्रद्धा, पूजन एवं पुष्प द्वारा व्यक्त करते थे। बौद्धों के अस्थि अवशेषों का पूजन सबसे महत्त्वपूर्ण और परम्परागत थी जिसका उल्लेख सम्भवतः फाह्यान ने भी किया है।[10]

फाह्यान के यात्रा वृतांत से पता चलता है कि राजा स्वयं वैष्णव धर्म का अनुयायी था, परंतु वह अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था। प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के पालन की पूर्ण स्वतंत्रता थी, राज्य उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करता था। तत्कालीन नगरों में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन देवालय विद्यमान थे। सभी धर्मों के लोग आपस में मिल– जुलकर रहते थे। गुप्त सम्राट ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं दोनों को सहायता देता था। बौद्धों के प्रत्येक वर्ष बड़े बड़े नगरों में निकाले गये जलूसों में ब्राह्मण भी शामिल होते थे।

फाह्यान की यात्रा–विवरण से गुप्तयुग में बौद्ध धर्म के व्यापक प्रसार का संकेत मिलता है। उसके अनुसार पंजाब, मथुरा तथा बंगाल में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार था। मथुरा में उसने बीस मठ देखे, जिनमें 3000 भिक्षु रहते थे। ताम्रलिप्ति में उसने 24 संघाराम देखे थे। जनता बौद्ध धर्म के अहिंसा के सिद्धांत का व्यवहारिक रूप से पालन करती थी और बौद्ध भिक्षुओं को राज्य की ओर से सहायता दी जाती थी। फाह्यान ने बौद्ध भिक्षुणियों के द्वारा आनंद के स्तूप के पूजन का उल्लेख किया है।

फाह्यान के उल्लेखों से तत्कालीन भारतीय आर्थिक समृद्धि के उन्नत कृषि कर्म का प्रशंसात्मक विवरण प्राप्त होता है। उसने लोगों के खान–पान के सम्बन्ध में जिन उपभोग योग्य वस्तुओं का विवरण दिया है, उनमें फल, घी, दूध आदि के साथ शाक–भाजी एवं कई प्रकार

की फसलों की खेती का परिचय प्राप्त होता है।[11] फाह्यान के अनुसार कृषि में ऋतुओं के अनुसार फसल बोने का उल्लेख है। जुताई, बुआई, निरायी और कटायी तथा रोपायी का भी उल्लेख मिलता है। फलों में उसने आंवला, भद्र, अपिय, अग्रफल (इमली), तिन्दुक, गूलर, नारिकेल, मोच एवं पनस (कटहल) की अधिकता पायी। अन्य फलों में खजूर, बादाम, लुकाट के विषय में उसका कथन है कि ये लोगों को ज्ञात नहीं हैं। नाशपाती, सेव, खुबानी, बेर एवं अंगूर उसके अनुसार कश्मीर से लेकर देश के विभिन्न भागों से उत्पन्न किये जाते थे। अखरोट एवं नारंगी देश भर में पाये जाते थे। प्याज और लहुसन की भी खेती होती थी।

गुप्त युग में भारत का विदेशों से व्यापार सम्बन्ध अत्यधिक उन्नत दशा में था। इस सम्बन्ध में फाह्यान की अपेक्षा प्लिनी के उल्लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उक्त चीनी यात्री ने भारत का विदेशों से सम्पर्क और व्यापार का उल्लेख किया है। ताम्रलिप्ति उन दिनों दक्षिण–पूर्व एशिया से व्यापार का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। वहाँ से जहाज बराबर लंका और हिन्देशिया की ओर आते–जाते रहते थे। स्वयं फाह्यान ने अपनी वापसी में इसी मार्ग को अपनाया था। साथ ही भारतीय जहाज और जहाजरानी की उसने प्रशंसा की है। भारतीय जहाज विशाल होते थे और भयंकर तूफान का सामना करने में समर्थ थे। उनमें छोटी–छोटी किश्तियाँ भी साथ होती थी। ये किश्तियाँ अवसर पड़ने पर प्रयोग में लायी जा सकती थीं।

फाह्यान का यह उल्लेख कि भारतीय क्रय–विक्रय में कौड़ियों का उपयोग करते थे। यह इस बात का कदापि सूचक नहीं है कि भारत में मुद्रा प्रणाली विकसित नहीं थी। हमें गुप्तकाल के सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के पर्याप्त मात्रा में देश के विभिन्न भागों से उपलब्ध हैं। वस्तुत फाह्यान का यह उल्लेख इस बात का सूचक माना जाना चाहिए कि वस्तुएँ इतनी सस्ती थीं कि लोग कौड़ियों में ही खरीद सकते थे। वैसे देश में अदला–बदली की प्रथा सर्वत्र चालू थी। फाह्यान ने भारत के नगरों, राजप्रासादों, भवनों, विहार, मन्दिरों तथा साधारण आवास गृहों के निर्माण और उनकी व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला है। पाटलिपुत्र में मौर्य प्रसाद, जो अब तक निर्जन हो चुका था, के निर्माण की कुशलता को देखकर उसे यही कहना पड़ा कि वह देवताओं द्वारा निर्मित था, मनुष्यों में इतनी कुशलता नहीं आ सकती।

फाह्यान के अनुसार तत्कालीन भारतीय सम्राट (चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य) की शासन व्यवस्था उच्चकोटि की थी। स्वयं ब्राह्मण धर्मावलम्बी होते हुए भी उसका धार्मिक दृष्टिकोण उदार था। देश के चारों ओर सुख और समृद्धि थी। राजा की भाँति प्रजा भी दयालु तथा धर्म–परायण थी। चौदह वर्षों के भारतीय प्रवास में उसे कोई दुर्भिक्ष अथवा राजनैतिक क्रान्ति देखने को नहीं मिली। उसके अनुसार लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे और न चीन की भांति भारत में रजिस्ट्री की व्यवस्था थी। आवागमन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न था। अपराध कम ही होते थे और दण्ड व्यवस्था सरल थी। बार–बार एक ही अपराध करने और राजद्रोह के अपराध में हाथ काट लेने का दण्ड दिया जाता था। कर भी साधारण थे और उनकी संख्या कम थी। अपराधियों को प्रायः अर्थ दण्ड मिलता था और प्राण–दण्ड की व्यवस्था न थी। फाह्यान के अनुसार केवल राजकीय भूमि से ही राज्य को विशेष रूप से कर मिलता था।[12] नगरों में निःशुल्क चिकित्सालयों में औषधि, खान–पान एवं सभी प्रकार की अन्य सुविधाओं का निःशुल्क प्रबन्ध होता था।

निष्कर्षतः प्राचीन काल में ईसा से पूर्व ही धर्म, कला, नीति सभ्यता व संस्कृति के क्षेत्र में भारत की ख्याति विदेशों में फैल चुकी थी। यही कारण है कि भारत सदैव विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। चौथी शताब्दी में फाहियान नाम का एक बौद्ध भिक्षु अपने तीन अन्य भिक्षु–साथियों के साथ भारत आया। चूंकि बौद्ध धर्म भारत से ही चीन गया था अतः फाह्यान का यहां आने का प्रमुख उद्देश्य बौद्ध धर्म के आधारभूत ग्रन्थ त्रिपिटक में से एक 'विनयपिटक' को ढूंढ़ना था। फाह्यान पहला चीनी यात्री था, जिसने अपने यात्रा–वृत्तांत को लिपिबद्ध किया। फाह्यान के अपने यात्रा वृतान्त में भारत की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति को भी लिपिबद्ध किया।

संदर्भ

1. वर्मा, जगमोहन, फाहियान का यात्रा विवरण, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 1996, पृ. 2–3
2. गाइल्स, एच.ए., द ट्रवेल्स ऑव फाह्यान, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, 1923, पृ. 6–7
3. वर्मा, जगमोहन, फाहियान का यात्रा विवरण, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 1996, पृ. पृ. 8
4. गोयल, श्रीराम, गुप्त और वाकाटक साम्राज्यों का युग, कुसुमांजलि प्रकाशन, मेरठ, 1988, पृ. 237–239
5. गुप्त, परमेश्वरी लाल, गुप्त साम्राज्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 441–442
6. गुप्त, शिवकुमार, प्राचीन भारत का इतिहास (78 ई0 से 650 ई. तक), पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1999, पृ. 352–354
7. उपाध्याय, भगवतशरण, गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास, हिन्दी समिति ग्रन्थमाला, उत्तर प्रदेश, पृ0 307–308
8. गुप्त, शिवकुमार, प्राचीन भारत का इतिहास (78 ई0 से 650 ई. तक), पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1999, पृ. 355
9. मजूमदार, आर.सी., श्रेण्य युग (हिन्दी अनुवाद), मोतीलाल बनारसी दास, 1984, पृ. 647

10. पाठक, विशुद्धानन्द, पांचवी से सातवीं शताब्दियों का भारत (चीनी यात्रियों की दृष्टि में) साहित्य संगम, इलाहाबाद, 1998, पृ. 10, 11, 24–26
11. गुप्त, शिवकुमार, प्राचीन भारत का इतिहास (78 ई0 से 650 ई. तक), पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1999, पृ. 362
12. मजूमदार, आर.सी., श्रेण्य युग (हिन्दी अनुवाद), मोतीलाल बनारसी दास, 1984, पृ. 398–399